

# श्री खाटू श्याम जी की कथा (शीश के दानी)

Khatu Shyam Katha PDF | [yuvadigest.com](http://yuvadigest.com)

श्री खाटू श्याम जी की कथा महाभारत के वीर बर्बरीक की कथा है, जिन्होंने अपना शीश श्रीकृष्ण को दान कर दिया था। इसी कारण भक्त उन्हें श्रद्धा से “शीश के दानी”, “हारे का सहारा” और “श्याम बाबा” कहते हैं। यह कथा लोक-मान्यताओं और परंपरा पर आधारित है। नीचे पूरी कथा क्रम से दी गई है, जिसे आप PDF के रूप में डाउनलोड भी कर सकते हैं।

## बर्बरीक कौन थे?

मान्यता है कि बर्बरीक पांडव भीम के पौत्र और घटोत्कच के पुत्र थे। बचपन से ही वे तेजस्वी, निडर और अपनी माता के परम भक्त थे। उन्होंने युद्ध-कला अपनी माता से सीखी और कठिन तपस्या करके देवी की कृपा पाई।

## तीन बाण और हारने वाले का साथ

कथा के अनुसार देवी की कृपा से बर्बरीक को तीन अचूक बाण मिले। कहा जाता है कि इन तीन बाणों से ही वे पूरी सेना को समेट सकते थे। वे नीले घोड़े पर सवार रहते थे, इसलिए उन्हें “नीले घोड़े का सवार” भी कहा जाता है।

जब कुरुक्षेत्र में कौरव और पांडवों के बीच युद्ध तय हुआ, तो बर्बरीक भी युद्ध देखने और उसमें भाग लेने के लिए निकल पड़े। माता को उन्होंने वचन दिया था कि वे उसी पक्ष का साथ देंगे जो कमज़ोर होगा और हार रहा होगा। यही वचन आगे चलकर उनकी पहचान बना और भक्त उन्हें “हारे का सहारा” कहने लगे।

## श्रीकृष्ण की परीक्षा

---

श्रीकृष्ण जानते थे कि बर्बरीक का वचन युद्ध को उलझा देगा। जिस पक्ष को वे सहारा देंगे, वह मज़बूत हो जाएगा, तब दूसरा पक्ष कमज़ोर पड़ेगा और उन्हें उसकी ओर जाना पड़ेगा। इस तरह युद्ध कभी खत्म ही नहीं होता।

इसलिए श्रीकृष्ण ब्राह्मण का वेश धरकर रास्ते में बर्बरीक से मिले और उनकी शक्ति की परीक्षा ली। उन्होंने एक पीपल के पेड़ के सभी पत्तों को एक ही बाण से बेधने को कहा। कथा है कि बर्बरीक ने बाण छोड़ा और सारे पत्ते बिंध गए। एक पत्ता श्रीकृष्ण ने अपने पैर के नीचे छिपा रखा था, तो बाण उनके पैर के चारों ओर घूमने लगा। बर्बरीक ने विनम्रता से कहा कि पैर हटा लीजिए, नहीं तो बाण आपको चोट पहुँचा सकता है।

## शीश का दान

---

बर्बरीक की शक्ति देखकर ब्राह्मण वेशधारी श्रीकृष्ण ने उनसे एक दान माँगा। बर्बरीक ने वचन दिया कि जो माँगोगे, वह दूँगा। तब श्रीकृष्ण ने उनसे उनका शीश माँग लिया।

कथा कहती है कि बर्बरीक क्षण भर के लिए चकित हुए, लेकिन अपने वचन से पीछे नहीं हटे। उन्होंने कहा कि यह साधारण ब्राह्मण का माँगा दान नहीं हो सकता और प्रार्थना की कि आप अपना असली रूप दिखाइए। तब श्रीकृष्ण ने अपना वास्तविक स्वरूप दिखाया। बर्बरीक ने सिर झुकाकर सहर्ष अपना शीश दान कर दिया। उन्होंने बस एक इच्छा रखी कि वे पूरा महाभारत युद्ध अपनी आँखों से देख सकें।

## युद्ध का साक्षी शीश और “श्याम” नाम का वरदान

---

श्रीकृष्ण प्रसन्न हुए और उन्होंने बर्बरीक का शीश युद्धभूमि के पास एक ऊँचे स्थान पर स्थापित कर दिया, जहाँ से वह पूरा युद्ध देख सके। मान्यता है कि युद्ध के बाद जब पांडवों में जीत का श्रेय लेने पर चर्चा हुई, तो बर्बरीक के शीश ने कहा कि उसने पूरे युद्ध में केवल श्रीकृष्ण को ही लड़ते देखा।

श्रीकृष्ण ने बर्बरीक को वरदान दिया कि कलियुग में वे उनके अपने नाम “श्याम” से पूजे जाएँगे और जो भक्त सच्चे मन से उन्हें याद करेगा, उसकी मनोकामना पूरी होगी। इसी वरदान के कारण आज करोड़ों भक्त उन्हें खाटू श्याम जी के रूप में पूजते हैं।

## खाटू में शीश का प्रकट होना

---

लोक-कथाओं के अनुसार बर्बरीक का शीश बाद में राजस्थान के खाटू गाँव की भूमि में प्रकट हुआ। कहा जाता है कि एक गाय जब उस स्थान पर पहुँचती, तो उसके थनों से अपने आप दूध की धार बहने लगती थी। यह देखकर गाँव के लोग चकित हुए।

मान्यता है कि उस समय के राजा को स्वप्न में आदेश मिला कि उस स्थान की खुदाई कराई जाए और जो विग्रह निकले, उसे विधि-विधान से प्रतिष्ठित किया जाए। खुदाई में शीश मिला और उसे प्रतिष्ठित किया गया। इसी के साथ खाटू श्याम जी का मंदिर स्थापित हुआ।

## खाटू श्याम मंदिर और फाल्गुन मेला

---

खाटू श्याम जी का मंदिर राजस्थान के सीकर ज़िले के खाटू गाँव में है। यहाँ पूरे साल देश-विदेश से भक्त दर्शन के लिए आते हैं। हर साल फाल्गुन महीने में यहाँ विशाल मेला लगता है, जिसमें लाखों श्रद्धालु पैदल यात्रा करके और निशान (ध्वज) लेकर पहुँचते हैं।

एकादशी के दिन भी यहाँ भक्तों की विशेष भीड़ रहती है। कई भक्त मानते हैं कि श्याम बाबा के दरबार में जो भी सच्ची श्रद्धा से आता है, वह खाली हाथ नहीं लौटता।

## खाटू श्याम जी की पूजा और भक्ति

---

भक्त खाटू श्याम जी की पूजा में आरती, भजन-कीर्तन और श्याम बाबा के नाम का जाप करते हैं। कई लोग सुबह-शाम श्याम जी की आरती करते हैं, एकादशी पर दर्शन और व्रत रखते हैं और मंदिर के दर्शन न कर पाने पर ऑनलाइन दर्शन से भी जुड़ते हैं। पूजा की विधि परंपरा और परिवार के अनुसार अलग हो सकती है, इसलिए अपने परिवार या मंदिर के पुजारी की सलाह भी ली जा सकती है।

**जय श्री श्याम। हारे का सहारा, बाबा श्याम हमारा।**

## अक्सर पूछे जाने वाले सवाल (FAQ)

---

### खाटू श्याम जी कौन हैं?

मान्यता के अनुसार खाटू श्याम जी महाभारत के वीर बर्बरीक हैं, जो घटोत्कच के पुत्र और भीम के पौत्र थे। श्रीकृष्ण के वरदान से कलियुग में उनकी पूजा “श्याम” नाम से होती है।

## शीश के दानी किसे कहते हैं?

खाटू श्याम जी यानी बर्बरीक को भक्त “शीश के दानी” कहते हैं, क्योंकि उन्होंने वचन निभाते हुए अपना शीश श्रीकृष्ण को दान कर दिया था।

## खाटू श्याम जी को हारे का सहारा क्यों कहते हैं?

कथा के अनुसार बर्बरीक ने अपनी माता को वचन दिया था कि वे युद्ध में हारने वाले पक्ष का साथ देंगे। इसी कारण भक्त उन्हें “हारे का सहारा” कहते हैं।

## बर्बरीक के तीन बाण क्या थे?

लोक-कथाओं में बताया गया है कि देवी की कृपा से बर्बरीक को तीन अचूक बाण मिले थे, जिनसे वे पूरी सेना को लक्ष्य बना सकते थे। इसी कारण उन्हें “तीन बाण धारी” भी कहा जाता है।

## खाटू श्याम जी का मंदिर कहाँ है?

खाटू श्याम जी का मंदिर राजस्थान के सीकर ज़िले के खाटू गाँव में स्थित है।

## खाटू श्याम जी का मेला कब लगता है?

हर साल फाल्गुन महीने में खाटू श्याम जी का विशाल मेला लगता है। सही तिथियाँ हर साल बदलती हैं, इसलिए यात्रा से पहले मंदिर की आधिकारिक सूचना देख लें।

## Khatu Shyam Katha PDF कहाँ से डाउनलोड करें?

इस पेज के ऊपर और नीचे दिए गए “PDF डाउनलोड करें” बटन पर क्लिक करके आप खाटू श्याम कथा की PDF मुफ्त डाउनलोड कर सकते हैं।

**और पढ़ें:** धर्म, जीवनी, करियर और युवाओं से जुड़े हिंदी लेख पढ़ने के लिए [yuvadigest.com](http://yuvadigest.com) पर आएं।

यह कथा लोक-मान्यताओं और परंपरा पर आधारित है और इसे Yuva Digest ने अपने शब्दों में प्रस्तुत किया है। © Yuva Digest. निजी पठन और साझा करने के लिए मुफ्त।